प्रस्तुतकत्री- अनुपम (अतिथि प्राध्यापक)

हिंदी विभाग, आर डी एस कॉलेज मुजफ्फरपुर

स्नातक- प्रतिष्ठा,

खण्ड 1, पत्र Gen &Subsi

सूरदास के पदों से कुछ महत्वपूर्ण व्याख्या

निस दिन बरसात नैन हमारे ..... गोकुल काहे बिसारे।।

व्याख्या:-- प्रस्तुत पद सूरदास का एक लोकप्रिय पद है जो एक बार गोपियों के चरम विरहासक्ति एवं आत्म निवेदन के लिए प्रसिद्ध है तो दूसरी ओर अपनी परम गीतात्मक और लयात्मक गठन के लिए। इन पंक्तियों में गोपियों के विरह की अकथ वेदना वर्णित है।एक गोपी व्यथा भरी वाणी में कह रही है कि हमारी आंखें प्रतिदिन बरसती रहती है जबसे कृष्ण हमसे मुंह मोड़ कर चले गए तब से तो हमारी आंखों में सदा बरसात ही उमडी हुई रहती है। अनवरत अश्रु पात होने के कारण कभी काजल नहीं लग पाता काजल आंसू के साथ बहकर गालो और छाती को काला कर देता है।

लगातार आंसू बहने के कारण चोली कभी सूखती नहीं और ऐसा प्रतीत होता है कि हृदय के भीतर आंसुओं की धारा बह रही है। सूरदास के शब्दों में गोपी कहती है कि हे श्री कृष्ण! अब तो ब्रज की विरहिणी का अश्रु जल इतना बढ़ गया है कि उसमे सारा गोकुल ही डूब जाएगा। तुम से आग्रह है कि इस डूबते हुए गोकुल को एक बार फिर बचा लो ।एक बार तो तुमने गोवर्धन धारण कर इंद्र के प्रकोप से गोकुल की रक्षा की थी। श्याम सुंदर कहां तक हम अपना दुख तुम्हें सुनावे। अब दुख का भार असह्य हो गया है।

2) अखियां हरी दर्शन की प्यासी .....करवट लैहौ कासी।।

व्याख्या:--कृष्ण के वियोग में गोपियों की व्यग्रता का वर्णन कवि ने बड़ी मार्मिकता से किया है। गोपियों की आंखें श्री कृष्ण के दर्शन के लिए प्यासी है। गोपियां कमलनयन श्री कृष्ण के दर्शन के लिए इतनी उत्सुक है कि वे नित्य प्रति उदास रहती है। गोपियां कमलनयन वह कृष्ण को देखना चाहती हूं पर देख नहीं पाती। यहां

उद्धव निर्गुण ब्रह्मा का उपदेश देने आए पर उनका कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। अतः ब्रज के आगन से लौट गए। निर्गुण की बातें कह कर तो गोपियों को और भी व्यग्र बना दिया उन्होंने ।चंदन और मोती की माला को धारण करने वाले श्री कृष्ण वृंदावन के वासी हैं। कोई भी एक दूसरे की मन की बात नहीं समझ पा रहा है, फिर भी कहता है कि वह सभी बातो से परिचित है।अंत मे कवि कहता है कि मैं भी कृष्ण के दर्शन की ही बाट जोह रहा हूं नहीं तो अब तक मैं काशी में करवट लेकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेता।

★★★★★★